



अधिकतम : 34°C
न्यूनतम : 23°C

अबरे छुपाता नही, छापता है

शाह टाइम्स

बोली, शनिवार 27 सितम्बर 2025 बोली संस्करण: वर्ष 22 अंक 303 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

shahtimes2015@gmail.com

आश्विन शुक्ल पक्ष 6 विक्रमी सम्वत् 2082

4 री उल सानी 1447 हिजरी

नई दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, देहरादून, हनुमानगढ़, मुद्राबाद, बरेली, मेरठ, लखनऊ से प्रकाशित



विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें।
मुफ्त पर E-paper



एआई की मदद से छात्रवृत्ति प्रक्रिया सरल बनाई जाएगी: योगी

पेज 2



हारिस रज्जफ पर गिरी आईसीसी की गाज खेल टाइम्स

पेज 2



प्रकृति, संस्कृति और समाज को जोड़ता सतत पर्यटन लगातार

पेज 12



तुकी के जवाब में भारत ने साइप्रास का मुद्दा उठाया

पेज 12

पेपर लीक करवा रही भाजपा का दूसरा नाम 'पेपर चोर पार्टी': राहुल गांधी
नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने उत्तराखण्ड में पेपर लीक की त्राज घटना को लेकर भाजपा सरकार पर कड़ा प्रहार करते हुए शुक्रवार को कहा कि बार-बार पेपरलीक होने की घटनाओं से युवाओं का सपना तबाह करने वाली भाजपा सरकार 'पेपर चोर' सरकार बन गई है। श्री गांधी ने कहा कि अब तक भाजपा बोट चोरी कलाकर सत्ता में आने के चतुर्थ में लिपट रही है, लेकिन अब इससे भी आगे निकल कर देश के युवाओं के भाविष्य से खिलवाड़ कर रही है। उन्होंने उत्तराखण्ड में यूकेएसएसएससी के हाल में हुए पेपर लीक का हवाला दिया और कहा कि पेपर चोर हो चुकी भाजपा युवाओं को मेहनत पर पानी फेर रही है।

हाईकोर्ट ने खारिज की राहुल गांधी की याचिका
प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने सिख समुदाय से जुड़े विवादित न्याय को लेकर दायर गिराफती याचिका के खिलाफ कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की याचिका को खारिज कर दिया है। न्यायाधीश समीर जैन की अदालत ने इस मामले में सभी पक्षों की बहस पूरी होने के बाद तीन सितम्बर को अपना फैसला सुनवा दिया। राहुल गांधी ने वागमसी के संस्थान जब एएमपी/एमएलए कोर्ट के फैसले के खिलाफ याचिका दायर की थी। उन्होंने वागमसी एमपी एएमएलए कोर्ट द्वारा गिराफती याचिका स्वीकार किए जाने की भी थी। याचिका को खारिज कर दिया।

डा. मनमोहन सिंह के नाम पर पुस्तकालय का उद्घाटन
नई दिल्ली। कांग्रेस संसदीय रेल की नेता सोनिया गांधी तथा पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने गुजरात को यहां पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के नाम पर पुस्तकालय केंद्र और पुस्तकालय का उद्घाटन किया। डा. सिंह के नाम पर स्थापित इस एक नाम डा. मनमोहन सिंह अंतर्राष्ट्रीय केंद्र और पुस्तकालय रखा गया है। यह केंद्र कांग्रेस के नए मुख्यालय इंदिरा भवन में स्थापित किया गया है। इस केंद्र पर डा. सिंह की पुस्तकें, उनके लेख और भाषणों के संकलन रखे गए हैं। इस मौके पर डा. सिंह की पत्नी गुरशारणा कांग्रे, कांग्रेस संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी तथा अन्य कई प्रमुख नेता मौजूद रहे।

यूसीसी वक्त की जरूरत: हाईकोर्ट नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने शुक्रवार को देश में समान नारिकेल पहिना (यूसीसी) लागू करने की वकालत की कोर्ट में कहा कि नारिकेल पहिना विवाद को परिभाषित नहीं करता है, जबकि पोस्टो एट, बीएएफए को बीच अपराध है। नारिकेल के बीच बार-बार होने वाले उत्पन्न को देखते हुए इसकी कानूनी रूप से स्पष्ट व्याख्या जरूरी है।

ट्रम्प ने अब ब्रांडेड दवाओं पर लगाया 100 प्रतिशत टैरिफ

वाशिंगटन, वार्ता

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ब्रांडेड या पेटेंटेड दवाई पर 100 फीसदी टैरिफ लगाने का ऐलान किया है। ये टैरिफ एक अक्टूबर 2025 से लागू होगा। यह टैरिफ उन कंपनियों पर नहीं लागू होगा, जो अमेरिका में ही दवा बनाते हैं। भारत पर अमेरिकी राष्ट्रपति ने पहले ही 50 फीसदी टैरिफ लगाया है। ये टैरिफ 27 अगस्त से लागू हो चुका है। कफर, जेम्स-जेम्स, फनीचर, सी फूड जैसे भारतीय प्रोडक्ट्स का एकसपोर्ट इससे बर्बाद हो गया है। हालांकि दवाओं को इस टैरिफ से बाहर रखा गया था। ट्रम्प ने कहा कि एक अक्टूबर से हम ब्रांडेड या पेटेंटेड दवाई पर 100 फीसदी टैरिफ लगा देंगे, सिवाय उन



एक्सपोर्ट इससे बर्बाद हो गया है। हालांकि दवाओं को इस टैरिफ से बाहर रखा गया था। ट्रम्प ने कहा कि एक अक्टूबर से हम ब्रांडेड या पेटेंटेड दवाई पर 100 फीसदी टैरिफ लगा देंगे, सिवाय उन

■ एक अक्टूबर से लागू होगा नया फरमान, अमेरिका को 30 प्रतिशत दवाई एक्सपोर्ट करता है भारत
■ जेनेरिक दवाओं पर भी बैन लगा सकते हैं ट्रम्प
■ जेनेरिक दवाओं का विश्व में सबसे बड़ा निर्यातक है भारत

अमेरिका के साथ व्यापार समझौते पर हुई रचनात्मक बातचीत: सरकार

नई दिल्ली। सरकार ने शुक्रवार को कहा कि वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गायल के नेतृत्व में अमेरिका पर भारतीय प्रतिनिधिमंडल की वहां की अधिकारियों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते की दिशा में रचनात्मक बातचीत हुई और दोनों पक्षों ने निर्णय तक शीघ्र पहुंचने के लिए बातचीत जारी रखने का फैसला किया है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने कहा कि भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने 22-24 सितम्बर तक अपने दौर में वहां अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जेम्स ग्री और भारत के लिए नामित अमेरिकी राजदूत सैंडिया गोर के साथ बैठक की। बयान में कहा गया है कि प्रतिनिधिमंडल ने समझौते के विभिन्न पहलुओं पर अमेरिकी सरकार के साथ रचनात्मक बैठक की। दोनों पक्षों ने समझौते की संभावित रूपरेखा पर विचारों का आदान-प्रदान किया और पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यापार समझौते पर शीघ्र निष्कर्ष निकालने के उद्देश्य से बातचीत जारी रखने का निर्णय लिया गया।

कंटेनरेशन चल रहा है। इसलिए, लगभग। जिम्मेवित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के चीफ इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटेजिस्ट - शेष पृष्ठ दो पर

वांगचुक एनएसए के तहत गिरफ्तार
लेह। लद्दाख में राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग को लेकर आंदोलन का नेतृत्व कर रहे पर्यावरणविद और सामाजिक कार्यकर्ता सोमन वांगचुक को पुलिस ने शुक्रवार को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (एनएसए) के तहत गिरफ्तार कर लिया है। यह कार्रवाई उस घटना के एक दिन बाद हुई, जब लेह में बंद और विरोध प्रदर्शनों के दौरान सुरक्षाबलों और प्रदर्शनकारियों के बीच हुई भीषण झड़पों में चार लोगों की मौत हो गई थी। वांगचुक की गिरफ्तारी के बाद लेह में इंटरनेट सेवा बंद कर दी गई है।

आई लव मुहम्मद के बैनर को लेकर बरेली में बवाल

सड़कों पर उतरे सैकड़ों लोग, तोड़फोड़-हंगामा, पुलिस ने किया लाठीचार्ज

शाह टाइम्स ब्यूरो

बरेली। बरेली में शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद मुस्लिम समाज के लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। शाहर के अलग-अलग इलाकों में आई लव मुहम्मद लिखे पोस्टर बैनर लेकर सैकड़ों लोग सड़कों पर उतरे। इस दौरान खलील स्कूल के पास कुछ शराती तत्वों ने तोड़फोड़ की। पुलिस ने रैली पर काबू पाने के लिए लाठीचार्ज किया। साथ ही मौलाना तौकीर रजा को नजरबंद कर लिया गया है।

जो आईसीटी बरेली अजय कुमार साहनी ने कहा कि नमाज शान्तिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई। कुछ शराती तत्व माहौल खराब करना चाहते थे, उन्हें खदेड़ दिया गया है। श्यामगंज में पुलिस ने प्रदर्शन करने वालों को रोकने का प्रयास किया। इस दौरान एएमपी क्राइम से नोकड़ों की भीड़, लेकिन जल्द से रूप से भीड़ नाराजगी करते हुए आगे बढ़ती गई। स्थिति को देखते हुए श्यामगंज में पुलिस ने दुकानों की बंद करा दी। नौमहला मस्जिद के बाहर भी सैकड़ों लोग जुटे। लोगों ने नाराजगी करते हुए प्रदर्शन किया। वहां, खलील स्कूल के जमान पर निर्गो और लोगों के पैरों तले आगें इससे इस्लाम को तोड़ने की कोशिश की जा रही है। प्रदर्शनकारियों को शांति करने के लिए पुलिस ने लाइव फायर चलाया, तो भागदौड़ मच गई। इब्राहिम-ए-मिल्लत पहुंचने की बात करी है। जमान में लोगों ने शांतिपूर्ण तरीके से शांति करने की कोशिश की। इसमें भागदौड़ मच गई। इब्राहिम-ए-मिल्लत पहुंचने की बात करी है। जमान में लोगों ने शांतिपूर्ण तरीके से शांति करने की कोशिश की।



मौलाना तौकीर रजा नजरबंद जुमे की नमाज शान्तिपूर्ण संपन्न

पोस्टर को गड़ियों पर लगाकर न घुमें
बरेली। दरगाह की तरफ से युवाओं से यह अपील की गई कि वह पोस्टर को गड़ियों पर लगाकर न घुमें, घरो पर पोस्टर न चिपकाएं और पोस्टर लेकर न घूमें। शांतिपूर्ण तरीके से शांति करने की कोशिश की। इसमें भागदौड़ मच गई। इब्राहिम-ए-मिल्लत पहुंचने की बात करी है। जमान में लोगों ने शांतिपूर्ण तरीके से शांति करने की कोशिश की।



सहारनपुर में जुमे की नमाज के बाद लहराया 'आई लव मुहम्मद' का पोस्टर

सहारनपुर ब्यूरो। महानगर में जुमे की नमाज के दौरान एक युवक ने 'आई लव मुहम्मद' के नाम का पोस्टर लहराया। इसके बाद पुलिस ने तुरंत उसे पकड़ लिया। काफी ज़ोरबंदी के बाद उससे पोस्टर छीन लिया और अपने साथ ले गई। महानगर की जामा मस्जिद में शुक्रवार दोपहर एक बजे नमाज शुरू हुई। नमाज अंता होने के बाद नमाजी अपने-अपने घर की ओर जाने लगे, तभी उनमें से एक व्यक्ति ने अपनी जेब में से आई लव मुहम्मद लिखा पोस्टर निकालकर लहराना शुरू कर दिया। वहां मौजूद पुलिसकर्मियों ने तत्काल उस व्यक्ति को पकड़ लिया और उसे वहां से हटा दिया। पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था के लिए अफरातफरी का माहौल हो गया। पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था के लिए कड़े बंदोबस्त किए थे। मौके पर परामर्श मात्र में पुलिस बल एवं अधिकारी मौजूद रहे। बताया गया कि पुलिस उक्त व्यक्ति से पूछताछ कर रही है।

वाले रोड पर बैरिकेडिंग करने के साथ भारी फोर्स तैनात की गई। सेलानी इलाका बंद रहा। दोपहर होते-होते लोग घरों से निकलने लगे। जुमे की नमाज के बाद लोग जुलूस - शेष पृष्ठ दो पर

दिल्ली-NCR में पटाखे बनाने की इजाजत, बिक्री पर रोक

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने दिवाली से पहले शुक्रवार को दिल्ली-एनसीआर में पटाखा बनाने की इजाजत दे दी। कोर्ट ने कहा कि जिन मैनुफैक्चरर्स के पास तैयार पटाखा बनाने के लिए एप्लाइड आर और पीएसओ का परमिट है, सिर्फ वे ही पटाखा बना सकते हैं।

सोई आर बीओ गवर्न, जस्टिस के, विनोद चंद्र और जस्टिस एनबी आरिआर की बेंच ने मैनुफैक्चरर्स के लिए एक अलग भी रखा। बेंच ने कहा कि कोर्ट के अलावे आदेश तक एनसीआर में कोई भी पटाखा नहीं बेचेगा। अगली सुनवाई 8 अक्टूबर को होगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पटाखों पर पूरी तरह बैन न तो संभव है, न ही यह सही है। हम केंद्र से आग्रह करते हैं कि दिल्ली सरकार, पटाखा बनाने और बेचने वालों सहित सभी हितधारकों से बातचीत करके पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध को संशोधित करें।

उत्तराखंड राज्य चुनाव आयोग पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाया दो लाख का हर्जाना

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुजरात को उत्तराखंड राज्य चुनाव आयोग (एससीओ) को उस चुनौती को खारिज कर दिया, जो उसने हाईकोर्ट के आदेशों के खिलाफ चुनकर की थी। हाईकोर्ट ने आयोग के उस स्पष्टीकरण वाले संकल्प पर रोक लगा दी थी, जिसमें एससीओ ने कहा कि जिन उम्मीदवारों के नाम कई मतदाता सुचियों में दर्ज हैं, वे पंचायत चुनाव लड़ सकते हैं। जस्टिस विक्रम नाथ और संदीप मेहता को पीट ने यह आदेश पारित किया और एससीओ पर 2 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया। जस्टिस नाथ ने आयोग के वकील से सवाल किया कि आप कैसे वैधानिक पंचायती राज अधिनियम, 2016 को हाईकोर्ट में दाखिल याचिका में बताया गया



सुप्रीम कोर्ट बोला- सिर्फ ग्रीन पटाखा बना सकते हैं, बैन का आदेश लागू नहीं हो सकता

का प्रस्ताव लेकर आए। एक व्यावहारिक समाधान लेकर आए, जिससे सभी स्वीकार करें। सुप्रीम कोर्ट ने 3 अगस्त 2025 को दिल्ली-एनसीआर में पटाखों पर बैन सिर्फ सड़कों के मोहम के बजाय पूरे साल तक बंद करने का आदेश दिया था। इसे फैसले को कोर्ट में चुनौती दी गई है, जिस पर अभी सुनवाई चल रही है।

एससीओ को हाईकोर्ट के आदेश के खिलाफ याचिका खारिज

धा कि कई मामलों में ऐसे लोगों को चुनाव लड़ने की अनुमति दी जा रही थी, जिनके नाम एक से अधिक मतदाता सुचियों में शामिल थे। एससीओ के स्पष्टीकरण में कहा गया था कि किसी उम्मीदवार का नाम एक से अधिक पंचायत/क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्र/नगर निकाय की मतदाता सूची में दर्ज होने के आधार पर उसका नामांकन पत्र निरस्त नहीं किया जाएगा। हाईकोर्ट ने उपलब्ध सामग्री का अध्ययन करने के बाद यह पाया कि वह स्पष्टीकरण उत्तराखंड प्रावधानों के विरोध में है। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट में दाखिल याचिका में बताया गया

मिग-21 ने मरी आखिरी उड़ान, 62 साल बाद हुआ रिटायर

चंडीगढ़, वार्ता

भारतीय वायुसेना की रीढ़ कहा जाने वाला मिग-21 एयरक्राफ्ट शुक्रवार को रिटायर हो गया। चंडीगढ़ एयरबेस में फाइनर ब्रेक को विदाई दी गई। शुक्रवार से विमान की सेवाएं आधिकारिक तौर पर खत्म हो गई हैं। विदाई समारोह में एयरफोर्स चीफ पीएल सिंह ने 23 बख्श के 6 जेट के साथ आखिरी उड़ान पूरी। स्वाइन लीडर प्रिंस शर्मा ने भी फ्लाईपास्ट में हिस्सा लिया। 1963 में एयरक्राफ्ट चंडीगढ़ में ही वायुसेना में शामिल हुआ था। 62 साल की सफ़र के दौरान सुपरसोनिक मिग-21 ने 1965 के भारत-पाक युद्ध, 1971 के

■ मिग-21 की अंतिम उड़ान में एयरफोर्स चीफ ह्यू सवार
■ 1965, 1971 और कारगिल जंग में शामिल रहा चर्चित एयरक्राफ्ट



एलसीए मार्क 1ए को शामिल किया जाएगा। मिग-21 के रिटायरमेंट समारोह में रक्षा मंत्री राजन सिंह, तीनों सेनाओं के प्रमुख समेत रक्षा मंत्रालय के कई अधिकारी शामिल हुए। रक्षा मंत्री राजन सिंह ने कहा कि लंबे समय से मिग-21 अनेकों वीरतापूर्ण कार्यों

का साक्षी रहा है। इसका योगदान किसी एक घटना या किसी एक युद्ध तक सीमित नहीं रहा है। 1971 के युद्ध से लेकर कारगिल संघर्ष तक, या बालाकोट हवाई हमले से लेकर ऑपरेशन सिंदूर तक, ऐसा कोई क्षण नहीं रहा जब मिग-21 ने हमारे साराख बलों को जबरदस्त

Global HR Solutions
Kyrgyzstan (Bishkek)

जल्द जरूरत है !
जॉब्स उपलब्ध

- वेल्डर (3G & 4G ARC)
- राज मिस्त्री
- कंस्ट्रक्शन लेबर
- सिलार्ड टेकर

वेतन: 700 USD प्रति माह (नेट)

टेक्स कम्पनी देगी

आवश्यक दस्तावेज:

- रेक्रेड
- योग्यता प्रमाणपत्र
- सर्विस सर्टिफिकेट
- वेल्डर टेस्ट रिपोर्ट

सम्पर्क करें :-
+91 8630026067

इसके बाद बारात मोहल्ला खंडा मुल्लाना मुशियान जाटय कालोनी चौधरियाण कोही दारास से हाइवे पर होते हुए रामललीा ग्रांडेड पर जाकर समाप्त हुई बारात का जगह जगह फूल बरसाकर स्वागत किया गया इस मौके पर रामललीा कमेटी अध्यक्ष मयंक कुमार मोनू विजय पांडेय विपिन गुप्ता राजू चौधरी अनिल त्यागी चन्द्रभा गजूमर अतुल चौधरी जीत सिंह सुभाष गुप्ता सुभम चौधरी राहु गुप्ता राहु रॉयक बबलु गुप्ता राहुल गुप्ता सुशील गुप्ता राजीव तोमर आदि मौजूद रहे।

पीडीए ने पंचायत आयोजित कर जटाया समर्थन

इस दौरान समाजवादी युवजल सभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं सपा नेता राज. कुमार 'राजू' ने कहा कि 'वर्तमान सरकार पूरी तरह से आरक्षण विरोधी है और संविधान के सिद्धांतों की धज्जियां उड़ा रही है। उन्होंने कहा कि पीपीए समाज के युवक, युवती, महिला और पुष्प अब जागरूक हो चुके हैं और 2027 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए एकजुट हैं' पूर्व विधायक अरशद खान ने कहा कि

खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। नागरिकों से अप्रत्यक्ष रूप से संघर्ष या भीड़ काटने की सूचना देने का कहना गया है। मित्रिष्ठ विचारों वाले क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखी जा रही है। साथ ही बताया कि सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने हुए तत्काल गिरफ्तार किया जाएगा। हाल ही में महाराष्ट्र पुलिस ने सीएचए के खिलाफ अपमानजनक पोस्ट करने वाले के खिलाफ कार्रवाई करना दर्ज किया है। पुलिस ने चेतावनी दी है कि सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने बताया कि नयागंज दरान सुख्खा व्यवस्थापक चक्र-चौदवार रहने की सोशल मीडिया पर भी कड़ी निगरानी रखी जा रही है।

[illegible]

उदाहरण सत्तारूढ पार्टी के निजामियक के आवस के बाहर जमावरद एवं अज्ञात हथियारबंद बदमाशों द्वारा फायरिंग करने एवं केनिनेट मंत्री प्रतिनिधियों को दो बार जाने से मारने या मारने से हटाने जैसी कमकियाँ रखने वाला पुलिस के लापरवाही का ही नतीजा है। ऐसे में कैसे व्यापारी अपने आपको सुरक्षित महसूस करेगा।

मामलों में पुलिस हरकत में आये और आबरोन फानिन में अज्ञात हमलाबोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उनकी धरकक के लिए दबिष देनी पक कर दी है। [वक्स

स्वायं शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** गंगा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. मुम्बई-४०, चैत्य रोड, बुम्पफरमगंज से मुद्रित एवं मोहल्ला सोनी टोल शाहजानपुर रोड बेरली, उप्र।

सम्पादक:
एस.एन. राना
“कार्यकारी सम्पादक
आनन्द ब्रज ‘सुमन’
☎0581-2562222 (बेरी)
मुख्यालय:
मोबाइल-9720007290
R.N.I.No.UPHIN©2013/1165
www.shantinews.com
email:shantinews2015@gmail.com

“दूर अर्थ में प्रकाशित सम्पादक स्वयं के अर्थ एवं सम्बन्धित **PRB** एफके के अधीन शाहजानपुर। सम्बन्धित व्यवस्थापक प्रकाशक स्वयं के अधीन ही होगी।

सैकड़ों ने ग्रहण की रालोद की सदस्यता

स्वर्गाय चीनो चरगा हिले जे अनया पूजा चीन कसानो को समर्पित कियार। उनके बाद उनके देते पूजे केंद्रो मी स्वर्गाय चीनो अलौति मिले मी अनया पूजा चीन कसानो के लिए दिए। अवे उनको तीसरी पीढ़ी भारत सरकार के केंद्रो मी चीनो जतने हिले ब्यार कोलत विधान विधान से नरी शक्ति को क्यूओओ को जोगार देते का कर रहे है। हमारा पुरोसो से गदगदथ जरूर है। इतराक देन अनया संगठन खुदा करत के लिए तन देन से लगे हवे हउ उत्तर प्रदेश हो नरी

शाह डाहाम संवाददाता
मिलक छात्रम्मा 26 सितम्बर
मुख्यमंत्री उजर प्रदेश सरकार द्वारा
महिलाओं की सुरक्षा के दृष्टिगत
चलाये जा रहे।
अभियान मिशन शक्ति फेज 5.0
के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय ग्राम
डिलारी में बालिकाओं की हेलपलाइन
नम्बर 1090 वाइल्ड केयर हेलपलाइन
नम्बर 1098 घरेलू हिंसा हेलपलाइन
नम्बर 181 पुलिस आपातकालीन
सेवा 112 मुख्यमंत्री हेलपलाइन नम्बर
1076 व साइबर क्राइम हेलपलाइन
नम्बर 1930 की जानकारी महिला
सुरक्षा दल थाना मिलक खानम द्वारा
द गै।

॥ ३॥ को प्रभु कृष्ण मन्त्रानुभावी
को एक दिन का संकीर्तिका
नित्यनामिका निष्ठा किये गये।

संकीर्तिका निष्ठापरिवर्ती
नित्यनामिका को प्रभु कृष्ण
मिलाना को सर्वप्रथमका को निष्ठा
संकीर्तिका प्रभु कृष्णानुभावी
॥ ४॥ उन्होंने वाक्य कि मन्त्रानुभावी
प्रभुमन्त्रानुभावी प्रभु कृष्णानुभावी
को प्रभु कृष्णानुभावी प्रभु कृष्णानुभावी
सर्वप्रथमका को निष्ठा किये गये।

प्रभु कृष्णानुभावी प्रभु कृष्णानुभावी
प्रभु कृष्णानुभावी प्रभु कृष्णानुभावी
प्रभु कृष्णानुभावी प्रभु कृष्णानुभावी
प्रभु कृष्णानुभावी प्रभु कृष्णानुभावी

शाह डायमंड संवाददाता

मिलक पुलिस में एक जबरन बांधी जाती को गिरफ्तार कर संबंधित न्यायालय को भेजा। पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराध में अपराधियों को विरुद्ध जमाने एवं अधिवक्ता के द्वारा में फिर पुलिस अधीक्षक को फिट परवेक्षण में तथा क्षेत्राधिकारी मिलक जेनरल रामपुर के कृपाल परवेक्षण में तथा पटवारी निरीक्षक के तालिम में कोतवाल

मिलक पुलिस द्वारा आज एक नफर वारण्टी अभियुक्त शादाब पुत्र जरीफ खां निवासी दरखत खिन्नी निकट हार्मिड इण्टर कॉलेज थाना कोतवाली जनपद रामपुर स्वर्णधर बाबू संख्या 127/25 मु.अ.सं.402/24 धारा 316(2)/318(4)/352/351(3) बीएनएस चालानी थाना मिलायालय अफर सिविल जज प्रकर वक्र द्वितीय रामपुर को गिरफ्तार कर सम्बन्धित थानायालय रामपुर भेजा दिया।

बालकृष्ण की माखन चोरी से लेकर सूर्यनखा प्रसंग तक, रामपुर डूबा भक्ति रस में

■ रामलीला मैदान में छलका आस्था का न्वार, देर तक गुंजते रहे जयकारे
■ रामपुर को धरती बनी अयोध्या, रामलीला में उमड़ा जनसैलाब

शाह टाइम्स ब्यूरो
रामपुर। शुक्रवार को रात उत्सव फैलेस रामलीला ग्राउंड सिर्फ एक मैदान नहीं रहा, बल्कि ऐसा लगा मानो धरती पर अयोध्या उतर आई हो। ग्यारहवें दिन का श्रीरामलीला महात्सव ब्रह्मा, काला और अयोध्या का ऐसा सौम्य मनकर हमारे आधा दिलने दे रसिकों के दिल पर अतिर धारा छोड़ दी।
सुबह का आगवाह हुआ भगवान श्रीकृष्ण को रास और निक्कुल लीलाओं से। नरहं बाणकृष्ण को माखन चोरी की अदार् देखकर बच्चों की ऐसी ठहाकों में बहल गई, तो वहाँ बुजुर्गों की आंखें भीजि से छलक उठीं। माहौल ऐसा था कि हर कोई

खुद को बुंदवान की गलियों में महसूस कर रहा था। जैसे ही सूरज डूला, रामलीला मैदान रंगीन रोशनीयों से नहा उठा। 8:30 बजे मंच पर आए बुंदवान के कलाक. राों ने ऐसी जीवीत प्रस्तुतियाँ दी कि दर्शक मंचमग्न रह गए। भारत की का चित्रकूट अखिल, गुफाका प्रगति, सती अर्जुनराम मिलन, पंचदेवी का जीवन और सूर्यनखा नायिक छेतन जैसे प्रस्तों ने हर किसी की आत्मा को झकझोर दिया। मंचन के साथ गुंजते "जय श्रीराम" के नारों ने वातावरण को और अधिक दिखला से भर दिया। भीड़ का उत्साह इतना था कि नालियों की जगहाट्टाट्टा बार-बार मंचन को रोक देती और कलाकारों को



मुकुंदराकर लुककर आशीर्वाद स्वरूप यह श्रेय स्वीकारा पड़ता। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगरपालिका का चेयरमैन सना खानम, एसके अग्रवाल और मामुन शाह का समिति की ओर से शाल, गुणगुच्छ और मोमेटो देकर सम्मान किया गया। आयोजन समिति के अध्यक्ष विष्णु शरण अग्रवाल समेत नगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों की मौजूदगी ने

रामलीला की यह यात्रा हर दर्शक के हृदय में ऐसी अविस्मरणीय स्थिति जोड़ रही है, जिन्हें आने वाले वर्षों तक वहाँ मंच और भक्ति भाव से याद किया जाएगा।
इस मौके पर अध्यक्ष विष्णु शरण अग्रवाल, महामंत्री वीरेंद्र कुमार गर्ग, सह अध्यक्ष सुनील कुमार गोवाल सोनी ताक, सुभाष चन्द्र अग्रवाल ठेकेदार, ईश्वर सत्य अग्रवाल, विना. 'द कुमार गुप्ता ठेकेदार, वैद प्रकाश वर्मा, अरविन्द कुमार अग्रवाल, मनोज कुमार अग्रवाल, निरंजन कुमार गर्ग, कमेश्वर कुमार अग्रवाल (एड.), डॉ. अरब कुमार अग्रवाल, अरुण कुमार अग्रवाल, राम प्रताप सारीक, अनिल कुमार चौरसिया, राजीव सत्य गर्ग, विनोद कुमार अग्रवाल, शालि शरण राठौड़, हरिधाम गुप्ता, मनोज कुमार अग्रवाल, श्रीराम अग्रवाल, रविन्द्र कुमार प्रसाद, संजय अग्रवाल, डॉ. सुमित कुमार गोवाल और मौजूद रहे।



भरत को राम से मिलाप चित्रकूट में होता है, जहाँ वे राम को वापस अयोध्या ले जाने की प्रस्ताव करते हैं। इस दौरान, रावण भावपूर्ण संवाद होता है। अनसुया सीता को पतिव्रत धर्म के बारे में उपदेश देती हैं और उन्हें अपने पति की सेवा करने के महत्व के बारे में बताती हैं।
सूरीशण एक ऋषि हैं जिनसे राम-लक्ष्मण और सीता की मुलाकात होती है। सूरीशण राम की भक्ति

यादव, देवेश गुप्ता, दिनेश करपण, पुनीत अग्रवाल, अनु. सक्सेना, अरुण कौशिक सक्सेना, नवीन दयाल सक्सेना, विवेकी सक्सेना, अरुण यादव, राकेश यादव, रवि शर्मा, मन्मथ लाल सैनी, सोनू शर्मा, अश्विनीर विश्वामय, प्रमोद यादव, विनोद करपण, राजीव लोचन, जगन सिंह लोधी, मिर्द गुप्ता, गुहल शर्मा, ओपी सक्सेना, सचिन सिंह, संतोष प्रसाद और सक्सेन पराधिकारीगण गर्मद गुप्ता, मोहित मल्लोश, धर्मवीर

टाइल्स की दुकान में हजारों की चोरी

शाह टाइम्स संवाददाता
व्यार। शुक्रवार बीती रात रामपुर मार्ग पर एस बी आर अस्पताल के पास ग्राफ नाकनार राती निवासी बिलावल अली को टाइल्स व माबल की दुकान है जिसमें अज्ञात चोरों ने दुकान का पीछे दरवाजा तोड़ कर दुकान में चोरी कर ली चोरों ने दुकान में रखे दो बैटरी व टेबल की चोरी कर दुकान की छत पर 25 हजार तकन चोर ले गए।

सुबह जब दुकान परलोक ने अपनी दुकान खोलो तो पीछे दरवाजा व दरवा डूटी मिली जिसकी सूचना



दुकान मालिक बिलावल अली ने कोतवाली पुलिस को तहरीर दी कर दो कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंच कर चीजें में कुट पड़े हैं।

जुआ खेलते दो जुआरियों को किया गिरफ्तार, रुपये व ताश बरामद

शाह टाइम्स संवाददाता
सैफली। थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पट्टी कौल्लवाबाद के बंगलों में चल रहे जुए की सूचना सेपनी पुलिस को मिली सूचना के बाद पार पुलिस ने पट्टी कौल्लवाबाद के बंगलों में मौके पर चल रहे जुए में जुआरियों पर छापा मारी कर दो अभियुक्त कोलाम घुम निजावद्वीन व उदर अली पूर अग्रवाल अनी निजावगण ग्राम खरससी थाना सैफली जनपद रामपुर को आर खोले धर पकड़ा। पुलिस के मोता. निक उप्रोशन अभियुक्तों से 1560 रुपए फइ से 600 रुपये नगर व 52



पते लारा के साथ गिरफ्तार किया। पुलिस ने गिरफ्तारी व बयानपनी के आधार पर थाना सैफली में पु.अ.अ. 17/8/2025 धारा 13 सैफलीनक जुआ अधिकृत पंजीकृत कर

कौशल विकास के माध्यम से युवा अपनी आर्थिकस्थिति में सुधार करें

शाह टाइम्स संवाददाता
मसवासी। राज्य पहिल आयोग की सदस्य सुनीता सैनी ने युवाओं से कौशल विकास के माध्यम से स्वरोजगार को अपनाने का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि इससे न केवल युवाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, बल्कि दूसरों को भी रोजगार के अवसर मिलेंगे।
सैनी ने भाषणा कार्यकर्ता पृष्ठ के मौके को जोड़करा व्यावसायिक प्रतिष्ठान पर आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कई योजनाएं चला रही है। युवा बैंक ऋण की सहाया से टैट हाउस, सजु उद्योग

या उत्पन्न इकाई स्थापित कर अपने व्यवसाय शुरू कर सकें हैं। सरकार युवाओं और महिलाओं के लिए जनकल्याणकारी योजनाओं को चल रही है युवा और महिला सशक्त की कल्याणकारी योजनाओं का तलाउतन सक्ते हैं।
प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान प्रदान कर रही है। उन्होंने आगामी विकासपरप युवाव के लिए कार्यकर्ताओं से वीरार, रेशन कार्ड आवेदन किया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान डॉ. प्रेमप्रता, नगर मंडल अध्यक्ष देवेन्द्र रिवाकर सहित क्षेत्र के कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

जेब कतरे ने बाजार में युवक की जेब से तीस हजार रुपये किए साफ

शाह टाइम्स संवाददाता
मसवासी। शुक्रवार की बाजार करने गये युवक के जेबकतरी ने जेब वैसे ही हथकर रुपए साफ कर दिए जेब से रुपए गायब देख युवक के होरा उड़ गए बाजार में जेबकतरी को काफ़ी तलाश किया लेकिन कोई अंता नाला नहीं चला। रुपए गायब होने की तहरीर बीकी पुलिस दे दी गई है नगर में चौकी से करीब शुक्रवार की बाजार लगती इस बाजार में हर सप्ताह मोबाइल पर जेब कतरे रक्ष्य सफा करे रहते हैं। चौकी पास में होने के बाद भी इन जेब कतरी में

पुलिस का जरा भी खोच नहीं है अब फिर शुक्रवार की बाजार में नगर निवासी युवक मोहम्मद युसूफ बाजार से सामान खरीदने गया था। उसकी जेब से जेबकतरी ने तीस हजार रुपए निकाल लिये जब उसने अपनी जेब से तीस हजार रुपए गायब देखे तो तुरंत होरा उड़ गया। जेब से रुपए गायब की सूचना युवक ने मिलने वाली को दी बाजार में जेबकतरी को काफ़ी तलाश किया लेकिन कोई अंता नाला नहीं चल सका। युवक ने रुपए गायब होने की तहरीर बीकी पुलिस को दे दी है।

एक नजर

पं सुभाष शर्मा का किया स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता
बडौता। नगर के पंचमूर्ती शिव मंदिर के प्रांगण में लव कुश रामलीला कमेटी द्वारा आयोजित विशाल रामलीला आयोजन पर प्रमुख अतिथि चौधरी 84 ब्राह्मण समाज चौधरी देशाक्षप पं सुभाष शर्मा को प्रतीक चिह्न एवं फूल मालाओं से स्वागत अभिनंदन किया गया। इसके अलावा चौधरी वेदप्रकाश शर्मा को सम्मानित किया गया। गणमान्य लोगों ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर दिव्य, पंचव एवं मनमोहक कार्यक्रम के आयोजन के लिए पं देव कुमार शर्मा, केशी शर्मा, डा.मानोज बिजोनी फोर्नु पंडित एवं लवकुश रामलीला कमेटी, का समल टायफ मौजूद रहा।

प्रभु श्रीराम ने केवट से अपनी नाव में बैठाकर गंगा पार कराने का किया आग्रह

शाह टाइम्स संवाददाता
बडौता। नगर में श्रीकृष्ण महाराज ठाकुराणा प्रेम मण्डल रंगमंच पर केवट संवाद पर भक्त मिलाप का दर्शन दराशय गया। जब भगवान राम ने केवट से अपनी नाव में बैठाकर गंगा पार कराने का आग्रह किया, तो केवट ने मना कर दिया। है प्रभु, मैंने सुना है कि आपके भरण रह (पैर की धूल) में इतना जादू है कि एक पत्थर भी खी बन गया। मैंने तो यह नाव लकड़ी की है। अगर आपके चरण पड़ने से यह भी खी बन गई, तो मेरी रोजी-रोटी का क्या होगा? और मैंने सुना है कि आपका पैर पड़ने से जलोढ़ ने आगे बढ़ा कि वह उल्टे लकी चली जाए कराराण जब यह अपने शर्मा से उनके चरण भी लेला। उसने कहा कि यह सत्यार कह नहीं, बल्कि बाँक है। यह भावना के चरणों को धोकर अपने और अपने पुत्रों के पापों को धोना चाहता था।

मंदिर में पंडित पंकज दिवेद्वी ने पूजन और फिर किया दुर्गा सप्तशती का पाठ

बागपत। मां कृष्णाई के शरद की आशा सूर्य के समान है। दर्सी दिशाएं कृष्णाई के प्रकाश से प्रकाशमान होती हैं। कृष्णाई आता खुजाना है, सत खुजाओं में मंडलन, मनुष्य, बाण, कलप धूप, अमृत कलश, चक्र और जगजि क आठवीं खूबा में बघामला है। माता कृष्णाई सायक को सखी सिद्धियों और निधियों को देने वाली है। इनका महान शक्ति और साहस का प्रतीक सिंह है। ज्योतिषाचार्य पंडित भजजुमार शास्त्री ने बताया कि माता कृष्णाई का पूजन करने से सायक को मायन मिलता है और उसे खाली माय बनने की शरण मिलती है। माता कृष्णाई अपने बखलों पर सहर को भी अपने सायक को सायक और आध्यात्मिक नाली का शरण मिलता है। माता कृष्णाई को गंगा, जेब से सुनर कर आतू, पुर, बर और बुद्धि देवन करती हैं। माता के इस स्वयं पर कृष्णाई से पूजन करने से ज्ञान, कौशल और बुद्धि की चोखें बह निकलें हैं। शुभकार को जाकोनवास मंदिर में पंडित पंकज दिवेद्वी ने पूजन और फिर दुर्गा सप्तशती का पाठ किया।

वंश आत्महत्या के मामले में दोषियों पर हो कठोर कार्रवाई: प्रताप गुर्जर

शाह टाइम्स संवाददाता
बागपत। वंश पवार आत्महत्या मामले में भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) ने दोषियों को खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। भाकियू कार्यकर्ता एसपी कार्यालय पहुंचे, जहाँ एसपी सूरज राय ने उन्हें निष्पक्ष और कठोर कार्रवाई का आश्वासन दिया।



बली निवासी नरेंद्र पवार के पुत्र वंश पवार 13 सितंबर को सौरिध परिस्थितियों में घर से लापता हो गए थे। दो दिन बाद, 15 सितंबर को उनका शव रेलवे ट्रैक के पास मिला था। जांच में सामने आया कि वंश ने (डिजिटल ऑरेंट) के कारण आत्महत्या की थी। उन्हें साइबर टाग द्वारा आत्महत्या के लिए उकसाया गया था। इस मामले में पुलिस ने एक साइबर टाग को गिरफ्तार किया है और अन्य शामिल लोगों को तलाश जारी है।

वंश आत्महत्या के मामले में दोषियों पर हो कठोर कार्रवाई: प्रताप गुर्जर

शाह टाइम्स संवाददाता
बागपत। वंश पवार आत्महत्या मामले में भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) ने दोषियों को खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। भाकियू कार्यकर्ता एसपी कार्यालय पहुंचे, जहाँ एसपी सूरज राय ने उन्हें निष्पक्ष और कठोर कार्रवाई का आश्वासन दिया।



बाद, 15 सितंबर को उनका शव रेलवे ट्रैक के पास मिला था। जांच में सामने आया कि

कब्जे को लेकर लोगों का धरना जारी



शाह टाइम्स संवाददाता
टीकरी। कल्य में रामशरण घाट की भूमि पर अवैध कब्जा को लेकर स्थानीय लोगों का धरना नौवें दिन भी जारी रहा। कल्याणवासियों का आरोप है कि कुछ लोगों ने रमशरण घाट की भूमि पर कब्जा कर अवैध निर्माण का किया है। इस मामले में पहले भी कब्जा हटाने के आदेश जारी हो चुके हैं, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। अंतिका रियों ने अब दो दिन का समय दिया

है। राज्यस् विभाग की टीम ने मौके का सर्वे किया। लेखपाल और कानूनगो ने अपनी जांच रिपोर्ट तहसीलवार बहूत को सौंप दी है। धरने पर बैठे लोगों ने कहा कि जब तक अवैध कब्जा नहीं हटता, उनका विोध प्रदान जारी रहेगा। इस धरने में विनोद राठी, अमित कुमार, रमेश, इंद्रपाल, आमोदर, सोमपाल, देगपाल, तेजपाल, सुभाष ओं मनोन, विकास और पुषंद समेत कई लोग मौजूद रहे।

कार्यालय नगरपालिका परिषद बछरायू जलपद-अमरोहा

पत्रक: 327/8/ई-निविदा निर्माण कार्य/2023-24	दिनांक: 25.09.2025
अत्यकालीन ई-निविदा सूचना	
नगर पालिका परिषद, बछरायू में शासकीय विभागों में पंजीकृत ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका परिषद, बछरायू द्वारा निम्न कार्य राज्य वित्त आयोग से प्राप्त धनराशि से किये जाने हेतु पुनः अंतिमलाह निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। इच्छुक निविदादाता अपनी-अपनी ऑन लाइन निविदाएं दिनांक 27 सितम्बर 2025 को दोपहर 12:00 बजे से विनोद 09 अक्टूबर 2025 को सांय 5:00 बजे तक https://etender.up.nic.in पर डाल सक्ते हैं जो कि दिनांक 10 अक्टूबर 2025 को 11:00 बजे राति समित तथे इच्छुक निविदादाताओं की उपस्थिति में नगर पालिका परिषद, बछरायू के कालपर/कार्यालय अथवा जिलाधिकारी महोदय अमरोहा में खोली जायेगी। ई-निविदा से सम्बन्धित निम्न व शर्तें निविदा प्रपर के साथ संलग्न है जो कि वेबसाइट https://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।	
E-bid reference No.	3278/NPP B/2025
Publish date and time	27.Sep.2025 12:00Hrs
Last date and time for submission of E-Bids	09.Oct.2025 17:00Hrs
Date and time of opening of Online E-Bids	10.Oct.2025 11:00Hrs
Date and time of opening Financial Bids	After approval of Technical Bid
Place of opening of E-Bids	Executive officer, NPP/Bachhraon
अधिसूचना अधिकारी नगर पालिका परिषद बछरायू अमरोहा	
अध्यक्ष नगर पालिका परिषद बछरायू अमरोहा	

गैब बांग्लादेशकम गुलेब्या ने
 गोबाल ओर शोरी मारा, लेकिन
 नेपाल के डिफेंडर के नेत्र बल्ले
 ने उसे नकाम कर दिया। इस
 मोर्चे में भारतीय सैनिकों ने
 तेजी ला दी। कुछ ही पल बाद
 मोहम्मद एमरान ने बाई ओर से
 एक शानदार कूट दिया जो
 डल्लालमुनीनी गोपेट के पास
 गया, लेकिन आमतौर पर
 भारोमरेफे फौरन गोबाल नहीं कर
 पाया। शस्त्रकर्म के से, भारत पूरी
 तरह से अतिव्याप्त। मिश्रदल्लाल
 अनुशासन के साथ जगह बनाई।
 जैकब बैल्लालान ने पाकिस्तान
 चैनल बाद कर दिया, जिससे
 नेपाल के पास तैयारी थी।
 प्रयासों के अलावा कोही किल्ले
 नहीं बना। प्रस्था तथापार मार
 करने ही एक प्रयास, बांस्मिक
 एनफोर्स के शांतिशाली
 ड्राइव, ने गोलेफर पर मानवजीवीनी
 करके पूरी ताकत से बचाव
 करने पर मजबूर कर दिया।

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

शनिवार , 27 सितम्बर 2025

हड़बड़ाहट में ट्रम्प

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प बेहद हड़बड़ी में दिखाई दे रहे हैं। अमेरिका जैसे शक्तिशाली राष्ट्रपति के लिए इस तरह का आचरण बिल्कुल शोभा नहीं देता। एक तरफ भारत व अमेरिका के अधिकारी व्यापारिक डील को लेकर व्यस्त हैं, तो वहीं दूसरी तरफ इस वार्ता का नतीजा आए बिना ही डोनाल्ड ट्रम्प इस तरह की घोषणा कर देते हैं जो रिश्तों को और उलझा देती है। इस समय भारतीय प्रतिनिधिमंडल वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के नेतृत्व में अमेरिका गया हुआ है। जहां उसने 22 से 24 सितम्बर तक अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जैमीसन ग्रीर और भारत के लिए नामिक अमेरिकी राजदूत सर्जियो के साथ बैठक की। बैठक के बाद दोनों ही पक्षों ने माना है कि समझौते के विभिन्न पहलुओं पर रचनात्मक बैठक हुई। इस बीच डोनाल्ड ट्रम्प ने ब्रांडेड या पेटेंट दवाई पर सी फीसदी टैरिफ लगाने का ऐलान कर दिया। इतना ही नहीं यह टैरिफ एक अक्टूबर से लागू होने की बात भी कही है। हालांकि यह टैक्स उन कंपनियों पर लागू नहीं होगा जो अमेरिका में ही दवा बनाने के लिए अपना प्लांट लगा रही हैं। जैनरिक दवाओं को अभी इस टैरिफ से बाहर रखा गया है। हालांकि ऐसी आशंका जताई जा रही है कि अगला निशाना जैनरिक दवाइयां भी हो सकती हैं जैसाकि जियोजिाट इन्वेस्टमेंट्स लि. के चीफ इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटेजिस्ट वीके विजय कुमार ने कहा भी है कि भारत जो जैनरिक दवाओं का एक्सपोर्टर है, उसे इससे ज्यादा असर नहीं होगा, लेकिन हो सकता है कि राष्ट्रपति का अगला निशाना जैनरिक दवाएं हों। जैनरिक दवाइयां अमेरिका को एक्सपोर्ट करने वाला भारत सबसे बड़ा देश है। 2024 की ही बात करें तो भारत ने अमेरिका को लगभग 8. 73 अरब डॉलर की जैनरिक दवाइयां भेजी। जो भारत के कुल दवा एक्सपोर्ट का 31 फीसदी है। अमेरिका पहले से ही रूस से तेल खरीदने को लेकर भारत पर 50 फीसदी अतिरिक्त टैरिफ लगा चुका है। यहां यह भी याद दिलाना जरूरी है कि 16 सितम्बर को अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कार्यालय का एक दल भारत आया था और उसकी नई दिल्ली में वाणिज्य विभाग के अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक हुई थी, उस समय भी यह कहा गया था कि बातचीत बेहद सकारात्मक रही है। तो जब दोनों ही पक्षों के अधिकारी बातचीत को सकारात्मक बता रहे हैं, तो ऐसे में अमेरिकी राष्ट्रपति के इस फैसले को समझना बेहद मुश्किल हो जाता है कि आखिर वह क्या चाहते हैं। एक तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की समय–समय पर वह प्रशंसा करते दिखाई देते हैं, उन्हें अपना मित्र बताते हैं तो वहीं दूसरी तरफ वह भारत के साथ इस तरह के निर्णय लेने में देर नहीं लगाते जिससे भारत की स्थिति असहज हो जाती है। जाहिर है इस तरह के वातावरण में भारत को बेहद सतर्कता के साथ अमेरिका से ट्रेड के मामले में आगे बढ़ने की जरूरत है।

भाजपा का दूसरा नाम पेपर चोर

आज भाजपा का दूसरा नाम पेपर चोर है, देशभर में बार–बार होने वाले पेपर लीक ने करोड़ों मेहनती युवाओं की ज़िंदगी और सपनों को तबाह कर दिया गया है, उत्तराखंड का पेपर लीक कांड इसका ताजा उदाहरण है, लाखों युवाओं ने दिन–रात मेहनत की, लेकिन भाजपा ने चोरी से उनकी पूरी मेहनत पर पानी फेर दिया, हम लगातार मांग कर रहे हैं कि पेपर लीक रोकने के लिए मजबूत और पारदर्शी सिस्टम बनाया जाए, लेकिन मोदी सरकार इस पर आंखें मूंदकर बैठी है क्योंकि उन्हें युवाओं की बेरा. जगारी की नहीं, बल्कि अपनी सत्ता की चिंता है, बेरोजगारी आज देश की सबसे बड़ी समस्या है और यह सीधे तौर पर वोट चोरी से जुड़ी है. पेपर चोरों को पता है कि अगर युवाओं को रोजगार नहीं भी मिलेगा, तो भी वे चुनाव में वोट चोरी करके सत्ता में बने रहेंगे।

–राहुल गांधी, नेता विपक्ष, लोकसभा



पर्यटन केवल मनोरंजन, सैर-सपाटे या विश्राम का माध्यम नहीं है बल्कि यह मानव सभ्यता के विकास में निरंतर योगदान देने वाला एक ऐसा वैश्विक उद्योग है, जिसने संस्कृतियों को जोड़ा, विविधताओं को समझने का अवसर दिया और आर्थिक समृद्धि के साथ सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। विश्व पर्यटन दिवस 2025 का विषय ‘पर्यटन और सतत परिवर्तन’ इसीलिए अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह न केवल पर्यटन उद्योग के महत्व को रेखांकित करता है बल्कि यह भी दर्शाता है कि पर्यटन किस प्रकार दुनिया में सकारात्मक बदलाव का वाहक बन सकता है। ‘संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन’ द्वारा प्रतिवर्ष 27 सितम्बर को मनाया जाने वाला यह दिवस विश्व समुदाय को पर्यटन के बहुआयामी महत्व और इसके दूरगामी प्रभावों पर पुनर्विचार करने का अवसर प्रदान करता है।

पर्यटन का दुनिया की अर्थव्यवस्था में स्थान असाधारण है। वैश्विक स्तर पर यह उद्योग प्रतिवर्ष अरबों डॉलर का राजस्व उत्पन्न करता है और करोड़ों लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्टों के अनुसार, वैश्विक स्तर पर प्रत्येक दस में से एक नौकरी पर्यटन से जुड़ी है। विकसित देशों के साथ-साथ विकासशील राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में भी यह एक प्रमुख आधार स्तंभ के रूप में कार्य करता है। भारत की बात करें तो यह क्षेत्र देश की जीडीपी में लगभग 10 प्रतिशत योगदान देता है और सीधे या अपरोक्ष रूप से पांच करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। विश्व पर्यटन दिवस का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि यह हमें केवल आर्थिक आंकड़ों की चमक पर नहीं बल्कि उन सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों पर भी ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है, जिन्हें पर्यटन उद्योग के सतत विकास के लिए प्राथमिकता देना आवश्यक है।

पर्यटन सामाजिक समानता और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने का सशक्त माध्यम है। जब एक यात्री किसी दूसरे देश, राज्य या संस्कृति से जुड़ता है तो यह केवल यात्रा नहीं होती बल्कि यह संवाद, सहअस्तित्व और समझदारी का अवसर बनती है। एक ओर यह यात्रियों को नए अनुभव और दृष्टिकोण प्रदान करता है तो दूसरी ओर स्थानीय समुदायों को अपनी संस्कृति, परंपराओं और जीवनशैली को साझा करने का अवसर देता है। यही कारण है कि पर्यटन सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और पारंपरिक कलाओं, शिल्प और रीति-रिवाजों को पुनर्जीवित करने में मदद

प्रकृति, संस्कृति और समाज को जोड़ता सतत पर्यटन

करता है। कई बार जो कला या परंपरा लुप्त होने के कगार पर होती है, वह पर्यटन के कारण नए जीवन का संचार प्राप्त करती है। विश्व पर्यटन दिवस 2025 का केंद्रीय विचार पर्यटन को परिवर्तनकारी शक्ति है और यह परिवर्तन तभी संभव है, जब पर्यटन विकास के केंद्र में स्थिरता, लचीलापन और सामाजिक समानता को रखा जाए। आधुनिक समय में जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियां पर्यटन के समक्ष सबसे बड़ी बाधाएं बनकर उभरी हैं।

पर्यटन का अत्यधिक और अनियंत्रित विकास कई बार प्राकृतिक पारिस्थितिक संतुलन को बिगाड़ देता है। पर्वतीय क्षेत्रों में अत्यधिक पर्यटकों का दबाव ग्लेशियरों और प्राकृतिक संसाधनों पर प्रतिकूल असर डालता है, समुद्र तटों पर अनियंत्रित पर्यटन समुद्री जीवन को खरों में डालता है और ऐतिहासिक धरोहरों पर भीड़भाड़ से उनका संरक्षण कठिन हो जाता है। यही कारण है कि ‘सतत पर्यटन’ की अवधारणा आज सर्वाधिक चर्चा में है। सतत पर्यटन का अर्थ है ऐसा पर्यटन, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग हो, स्थानीय समुदायों को अधिकतम लाभ मिले और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण सुरक्षित रहे। इस दिशा में अनेक देशों ने उल्लेखनीय पहल की है। उदाहरणस्वरूप, भूटान ने पर्यटन पर ‘हाई वैल्यू, लो वॉल्यूम’ नीति अपनाई है, जिसके अंतर्गत वह पर्यटकों की संख्या सीमित रखते हुए गुणवत्तापूर्ण अनुभव प्रदान करता है ताकि पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संत. लुप्त न बना रहे। इसी प्रकार यूरोप के कई देशों ने ‘ग्रीन टूरिज्म’ मॉडल को अपनाकर पर्यावरणीय जिम्मेदारी को प्राथमिकता दी है। भारत में भी सतत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनमें इको-टूरिज्म, ग्रामीण पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन को विशेष महत्व दिया जा रहा है। पर्यटन का महत्व शिक्षा और कौशल विकास के संदर्भ में भी कम नहीं है। यह न केवल यात्रियों को नई संस्कृतियों और भौगोलिक क्षेत्रों से परिचित कराता है बल्कि



युवाओं को आतिथ्य, प्रबंधन, संचार और सांस्कृतिक समझ जैसे कौशल सीखने के अवसर भी देता है। भारत जैसे देश, जहां युवाओं की जनसंख्या बड़ी संख्या में है, पर्यटन क्षेत्र के माध्यम से विशाल रोजगार और उद्यमिता के अवसर प्रदान कर सकते हैं। छोटे कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में होम–स्टे, स्थानीय गाइड सेवा, पारंपरिक व्यंजन और हस्तशिल्प आधारित पर्यटन न केवल युवाओं को आत्मनिर्भर बना सकते हैं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा का संचार कर सकते हैं। पर्यटन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष शांति और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना है। जब विभिन्न देशों के लोग एक-दूसरे से जुड़ते हैं तो यह न केवल सांस्कृतिक समझ को बढ़ाता है बल्कि आपसी विश्वास और सहयोग की नींव भी रखता है। संयुक्त राष्ट्र ने भी पर्यटन को ‘शांति का दूत’ कहा है। इतिहास गवाह है कि जब भी देशों के बीच पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा है, आपसी संबंध मजबूत हुए हैं। इसीलिए पर्यटन को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं बल्कि वैश्विक शांति और सहयोग की दिशा में एक प्रभावी उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए।

डिजिटल तकनीक ने पर्यटन उद्योग में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। ऑनलाइन बुकिंग, वर्चुअल टूर, एआई आधारित ट्रैवल गाइड और स्मार्ट पर्यटन समाधान ने यात्रियों के अनुभव को न

केवल सरल बनाया है बल्कि अधिक सुलभ और सुरक्षित भी बनाया है। हालांकि तकनीक के उपयोग के साथ-साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी है। यात्रियों को अपने पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने, स्थानीय संस्कृति का सम्मान करने और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने जैसी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना होगा। केवल सरकार या उद्योग नहीं बल्कि प्रत्येक यात्री को भी यह समझना होगा कि उसकी छोटी-सी आदतें पर्यटन को सतत और परिवर्तनकारी बनाने में योगदान कर सकती हैं। भारत जैसे विविधताओं से भरे देश के लिए यह अवसर और चुनौती दोनों है।

यहां हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं से लेकर केरल की बैकवॉटरस, राजस्थान के रेगिस्तान से लेकर पूर्वोत्तर की हरियाली, वाराणसी के घाटों से लेकर कश्मीर की वादियों तक असीमित संभावनाएं हैं लेकिन इन संभावनाओं के साथ जिम्मेदारियों का बोझ भी जुड़ा हुआ है। अगर पर्यटन को अनियंत्रित और असंतुलित तरीके से बढ़ने दिया गया तो यह न केवल प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाएगा बल्कि स्थानीय समुदायों और सांस्कृतिक विरासत को भी प्रभावित करेगा। इसलिए पर्यटन विकास की हर नीति में स्थिरता और समावेशिता को प्राथमिकता देनी होगी।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

नमकीन स्राव से पनपता रेगिस्तानी पौधा

व्यापक शोध के बाद अल-हंदावी और उनकी टीम ने पाया कि दिन के समय में उत्सर्जन से बने नमक के रवे रात में पानी सोख कर फूल जाते हैं। टीम द्वारा की गई जांच से साबित हुआ कि जल संचयन में लवणों का प्राथमिक योगदान है, क्योंकि विशिष्ट परिस्थितियों में प्राकृतिक रूप से रवेदार परत वाली शाखाएं धुली हुई शाखाओं की तुलना में काफी अधिक पानी एकत्र करती है। यहां तक कि 50 प्रतिशत से कम आर्द्रता पर भी रवों पर ओस बन सकती है। एथल टमारिस्क की विशिष्टता इसके द्वारा उत्सर्जित लवणों का जटिल मिश्रण है।

मध्य पूर्व के शुष्क क्षेत्र में एथल टमारिस्क Tamari aphylla नामक एक रेगिस्तानी पेड़ जिंदा रहने के लिए एक अनूठी रणनीति अपनाता है। यह पौधा झुलसाने वाली गर्मी में पानी प्राप्त करने के लिए नमकीन स्राव का फायदा उठाता है। प्रोसीडिंग्स ऑफ नेशनल एकेडेमी ऑफ साइंसेज में प्रकाशित यह अध्ययन संकेत देता है कि पौधे दूधर परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए किस तरह के रासायनिक जुगाड़ करते हैं। गौरतलब है कि लवण से समृद्ध तटीय मिट्टी में पनपने वाला यह पौधा एक लवणमृदोदिभद (हैलोफाइट) है जो अतिरिक्त लवण को ग्रंथियों से बूंदों के रूप में स्रावित करके पतियों पर जमा करता है। जैसे-जैसे दिन गर्म होता है, इन चमकदार बूंदों का पानी तो वाष्पित हो जाता है जिससे पौधे पर सफेद रवों की परत जम जाती है जो अंततः तेज हवा से झड़ जाते हैं।

इस रणनीति का खुलासा तब हुआ जब अब्दु धाबी स्थित न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी की वैज्ञानिक मारिएह अल-हंदावी ने संयुक्त अरब अमीरात के गर्म, आर्द्र रेगिस्तानों से गुजरते समय इन रवों पर पानी को संधानित होते देखा। उनका अनुमान था कि इस प्रक्रिया में उत्सर्जित लवण-मिश्रण के रासायनिक संघटन की महत्वपूर्ण भूमिका रही होगी। व्यापक शोध के बाद अल-हंदावी और उनकी टीम ने पाया कि दिन के समय में उत्सर्जन से बने नमक के रवे रात में पानी सोख कर फूल जाते हैं। टीम द्वारा की गई जांच से साबित हुआ कि जल संचयन में लवणों का प्राथमिक योगदान है, क्योंकि विशिष्ट परिस्थितियों में प्राकृतिक रूप से रवेदार परत वाली शाखाएं धुली हुई शाखाओं की तुलना में



काफी अधिक पानी एकत्र करती है। यहां तक कि 50 प्रतिशत से कम आर्द्रता पर भी रवों पर ओस बन सकती है। एथल टमारिस्क की विशिष्टता इसके द्वारा उत्सर्जित लवणों का जटिल मिश्रण है, जिसमें सोडियम क्लोराइड, जिप्सम (कैल्शियम सल्फेट) और एक अन्य घटक-लीथियम सल्फेट- शामिल है जिसमें सोडियम क्लोराइड और जिप्सम की अपेक्षा कम आर्द्रता पर भी नमी को अवशोषित करने की क्षमता कहीं अधिक होती है। कई विशेषज्ञों के अनुसार यह अध्ययन एक नए स्तर की समझ प्रदान करता है जिससे यह पता चलता है कि कैसे रेगिस्तानी पौधे लवणों से

छुटकारा भी पाते हैं और हवा से पानी संचय के लिए इनका उपयोग भी करते हैं। इन लवणों का संघटन रेगिस्तानी पौधों द्वारा विकसित जटिल रणनीतियों को उजागर करता है। शोधकर्ताओं द्वारा किया गया यह अध्ययन अन्य रेगिस्तानी पौधों में भी इस प्रकार की विशेषता का संकेत देता है। संभव है कि अपना अस्तित्व बचाने के लिए हर पौधे के पास कोई विशिष्ट गुप्त नुस्खा हो। बहरहाल, इस अध्ययन से हमें विश्व भर में पानी की कमी से निपटने के तरीके के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त हुई है जो आगे खोज की संभावना का संकेत देती है। **–स्रोत फीचर्स**

सभी रोगों की जड़ है आपका मोटापा

चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि मोटापा आने से जीवन में पाबंदियों और परेशानियों के बढ़ जाने से जीवन की खुशियों में कमी आने लगती है और यही नहीं मोटापे से युक्त बड़ो़ल शरीर अनेक बीमारियों को निमंत्रण देता है। यह सच ही है मोटे और थुलथुल शरीर की एक ओर तो लोग हंसी उड़ाते हैं, वहीं दूसरी ओर यह अनेक रोगों की जड़ भी होता है। मोटापे से ग्रस्त व्यक्ति अन्य कई शारीरिक समस्याओं से घिर जाता है जैसे मोटापे से पीड़ित व्यक्ति के रक्त संचार में बाधा पहुंचती है। इस के साथ ही खतरा बढ़ जाता है हाई ब्लडप्रेशर, हार्ट अटैक जैसी कई अन्य जानलेवा बीमारियों का। खून की नलिकाओं में कैल्शियम व वसा की परत चढ़ जाती है, जिससे वे संकरी हो जाती हैं। इसी वजह से रक्त सामान्य रूप से नलिकाओं में नहीं बह पाता। इस प्रकार मोटे व्यक्ति के रक्त संचार में रुकावट पैदा होती है।

ज्यादा मोटापा होने पर आदमी अगर थोड़ा सा भी काम करे, तो वह हाफने लगता है अर्थात उसकी सांस फूलने लगती है, साथ ही वैंरीकोस वेंस (शिराओं के अवरूद्ध होकर फूल जाना) हार्निया, श्वसन तंत्र का संक्रमण जैसी बीमारियां भी मोटे व्यक्ति को आ घेरती हैं। जिसके कारण मोटा व्यक्ति पराश्रित हो जाता है। मोटापा मधुमेह रोग के लिए खुला निमंत्रण होता है। मोटे व्यक्ति मोटापे के बुरे प्रभाव को अच्छी तरह जानते हैं इसीलिए वे भीतर से काफी डरे हुए व हीनभावना का शिकार होते हैं। दवा, गोली, व्यायाम के साथ-साथ मोटापा कम करने के लिए आपरेशन भी एक आधुनिक चिकित्सा पद्धति है। इसके अन्तर्गत दो प्रकार से मोटापे को दूर किया जाता है।

एक में आमाशय का आकार कम कर दिया जाता है और दूसरे में, छोटी आंत की बाईपास सर्जरी करके मोटापे को दूर किया जाता है। मोटापे की वजह कम से कम श्रम करने वाली आधुनिक जीवन शैली है, ऐसा चिकित्सा विशेषज्ञ मानते हैं। यह ज्यादातर मध्य आयु वर्ग में शुरू होता है पर यह जरूरी नहीं कि यह मध्य आयु वर्ग में ही हो, यह किसी भी आयु वर्ग में शुरू हो सकता है।

मोटापा एक वंशानुगत रोग होता है। इसलिए जिन के परिवार में कोई भी मोटापे से भूतकाल या वर्तमान में परेशान हो तो उनको इसके लिए सावधानी बरतनी चाहिए। स्टैरोइड्स इसीलिए और गर्भ निरोधक गो丸ियां आदि कुछ दवाएं भी मोटापे की वजह बन सकती हैं। कुछ बीमारियों के कारण मोटापा होता है जैसे थायरायड ग्रंथि का कम काम करना (हाइपो थायरायडिज्म), पिट्यूटरी ग्रंथि का कम काम करना, (हाइपो पिट्यूट्रिज्म), कशिरिंग सिंड्रोम (एड्रीनल ग्रंथि का अधिक काम करना), हाइपा. गोनैडिज्म (सेक्स ग्रंथियों का कम काम करना) इत्यादि। चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि हर एक ग्राम वसा से नौ कैलोरी ऊर्जा का उत्पादन होता है और उनका करना है कि हमें हर रोज 800- 1600 कैलोरी का ही भोजन ग्रहण करना चाहिए। चिकित्सकों के अनुसार शराब पीने वालों को तो शराब का सेवन निश्चकल कम कर देना चाहिए, क्योंकि 30 सीसी व्हिस्की में पानी मिला कर पीने से 70 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। किसी भी व्यक्ति को कितनी ऊर्जा (कैलोरी) की आवश्यकता होती है, यह जानना हमारे लिए आवश्यक है। एक व्यस्क पुरुष को 2600 एनर्ज व्यस्क स्त्री को 2100 कैलोरी की आवश्यकता होती है। एक आराम की ज़िंदगी जीने वाली स्त्री को 2000 और

पुरुष को 2400 कैलोरी की जरूरत पड़ती है। मध्यमश्रमी पुरुष को 2600, अधिक परिश्रमी पुरुष को 3500 और कठोर परिश्रम करने वाले पुरुष को 4100 कैलोरी आवश्यक होती है। आप कितने मोटे हैं इसका अनुमान आप अपने वजन को देखकर लगा सकते हैं

उदाहरण के लिए यदि आप की ऊंचाई 165 सेंटीमीटर है, तो 45 किलोग्राम आपके लिए कम वजन, 56.70 किलोग्राम सामान्य वजन है और यदि आप का वजन 85 किलोग्राम है, तो आप मोटे हैं और अगर आप का वजन 113 किलोग्राम है, तो आप ज्यादा मोटे हैं। अगर आप मोटे हैं, तो 0.5 से 1 किला. ग्राम भार प्रतिमाह कम करने की टान लें। इसके लिए व्यायाम करना काफी हद तक लाभप्रद होता है, क्योंकि इससे हमारी ऊर्जा की खपत होती है। कई परिश्रम के समय 10 किलो कैलोरी खेलकूद और साइकिल चलाते समय सात किलो कैलोरी तथा दहलते समय पांच किलो कैलोरी ऊर्जा प्रति मिनट खर्च होती है। मोटापा एक ऐसी चीज है, जिसके कारण आप दूसरों के द्वारा उपहास का केन्द्र बन सकते हैं। अतः हमें अपनी सेहत का ख्याल रखना चाहिए। खानपान की अच्छी आदतों का पालन करना चाहिए। तली हुई चीजों से परहेज करना चाहिए, क्योंकि इनसे कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ती है। रोज व्यायाम



व खेलकूद से भी शरीर चुस्त दुरुस्त रहता है।

मोटापे को दूर करने के लिए कई प्रकार की दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है। आइए इनके बारे में जानें।
एंफीटामीन- इस दवा का इस्तेमाल आजकल कम होता जा रहा है, क्योंकि यह दवा दिमाग में ज्यादा उत्तेजना पैदा कर देती है और इससे भूख भी बहुत कम ही घटती है, जबकि चिकित्सक ज्यादा भूख घटाने की आशा करते हैं।
सीरोटोनीनार्जेक दवाएं- जैसे डेक्सफेन फ्लोरेमीन, फेन लोरेमीन आदि। इन दवाओं का इस्तेमाल उस स्थिति में किया जाता है, जबकि वजन बहुत तेजी से कम करना हो। जैसे हाई ब्लडप्रेशर या मधुमेह में ये दवाएं भूख घटाने की जगह व्यक्ति की तृप्ति का अहसास देती हैं।
कोलीसिस्टो कायनीन दवाईया- इस प्रकार की दवाएं भूख को शांत करती हैं। इन सबके अलावा आंतों के (लाइपेज एंजाइम) को निष्क्रिय करने वाली दवाओं का इस्तेमाल भी किया जाता है।

वेस्ट बैंक पर इजरायल का कब्जा मंजूर नहीं: ट्रम्प

कहा: मैं इसकी इजाजत नहीं दूंगा, नेतन्याहू के अगले हफ्ते अमेरिका आने पर इस मुताल्लिक होगी बातचीत

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि वेस्ट बैंक (फलस्तीन का हिस्सा) पर इजरायल का कब्जा मंजूर नहीं है। उन्होंने कहा है कि वे कभी इसकी इजाजत नहीं देंगे। हाल ही में इजरायल के अधिकारियों ने वेस्ट बैंक के कुछ हिस्सों को इजरायल में मिलने की बात कही थी। इस पर ट्रम्प ने ओवल आफिस में कहा, मैं इजरायल को वेस्ट बैंक को मिलाने की परमिशन नहीं दूंगा।

ऐसा नहीं होगा। अब बहुत हो चुका है। इस हफ्ते फ्रांस, ब्रिटेन समेत कई देशों ने फलस्तीन को मान्यता दी है। इस फैसले का इजरायल ने विरोध किया था। इसके बाद वेस्ट बैंक पर कब्जे को लेकर इजरायली अधिकारियों को बयानबाजी शुरू हो गई थी। नेतन्याहू अगले हफ्ते सोमवार को अमेरिका के दौरे पर जाने वाले हैं। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच व्हाइट हाउस में मुलाकात होगी। ट्रम्प



■ इस हफ्ते फ्रांस, ब्रिटेन समेत कई देशों ने फलस्तीन को मान्यता दी है
■ इस फैसले का इजरायल ने विरोध किया था
■ ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में नेतन्याहू का यह चौथा वाशिंगटन दौरा है

के दूसरे कार्यकाल में नेतन्याहू का यह चौथा वाशिंगटन दौरा है। वेस्ट बैंक, जार्डन के पश्चिम और यरुशलम के पूरब में स्थित है। 1948 में अरब-इजरायल जंग के बाद जार्डन ने इस पर कब्जा कर लिया था। जार्डन नदी के पश्चिम में होने की वजह से तब इसका नाम वेस्ट बैंक रख दिया गया। 1967 में 6 दिनों तक चले जंग के बाद इजरायल ने इस

इलाके को जार्डन से छीन लिया। तब से वेस्ट बैंक पर इजरायल का कब्जा बरकरार है। इस इलाके में 30 लाख से ज्यादा लोग रहते हैं। इसमें ज्यादातर फलस्तीनी हैं। इजरायल ने वेस्ट बैंक पर कब्जे के बाद कई यहूदी बस्तियां भी बसाईं अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के मुताबिक यहां बनाई गई इजरायली बस्तियां अवैध हैं। ट्रम्प लंबे समय से नेतन्याहू के

करीबी सहयोग का दावा करते रहे हैं। लेकिन उन पर अब अरब नेताओं का दबाव भी है। संयुक्त अरब अमीरात ने चेतावनी दी है कि किसी भी इजरायली कब्जे को रेड लाइन माना जाएगा।

ट्रम्प ने कहा है कि वो इजरायल को ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाने देंगे, जिससे अरब देशों के नेताओं में नाराजगी हो। 1967 के युद्ध में इजरायल ने वेस्ट बैंक, पूर्वी यरुशलम और गाजा पट्टी पर कब्जा किया था। फलस्तीनियों की मांग है कि ये तीनों क्षेत्र भविष्य में उनके राज्य का हिस्सा होने चाहिए। मानना है कि इजरायल का कब्जा ट्रस्ट सॉल्यूशन (दो राष्ट्र समाधान) या अलग फलस्तीनी देश बनाने की संभावना को खत्म कर देगा। इजरायल की मौजूदा सरकार फलस्तीनी देश के बनने का विरोध करती है और वेस्ट बैंक के ज्यादा से ज्यादा हिस्से को अपने में मिलाना चाहती है।



बिहार। मोतीहारी में हर घर अधिकार रैली में शामिल होतीं कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी रैली में अपार भीड़ से मददगार नजर आईं।

UNRWA के लिए धन, राजनीतिक समर्थन का आग्रह

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने गुरुवार को निकट पूर्व में फलस्तीन शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) के लिए धन और राजनीतिक समर्थन का आग्रह किया।

गुटेरेस ने यूएनआरडब्ल्यूए के समर्थन में आयोजित मंत्रिस्तरीय बैठक में कहा कि मैं आज आपसे अपील करता हूँ कि आप यूएनआरडब्ल्यूए को आवश्यक धनराशि और राजनीतिक समर्थन प्रदान करें, ताकि फिलस्तीनियों, इजरायिली और क्षेत्र के लिए शांति एवं स्थिरता का निर्माण किया जा सके। अपने संबोधन में, संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने कहा कि फलस्तीनी शरणार्थियों की कई पीढ़ियां शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य आवश्यक सेवाओं के

■ यूएनआरडब्ल्यूए को बढ़ते दबाव में काम करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है

लिए यूएनआरडब्ल्यूए पर निर्भर रही हैं। अक्टूबर 2023 से पहले, इसने पूरे क्षेत्र में पांच लाख लड़कियों और लड़कों को स्कूली शिक्षा प्रदान की। आज यह 26 लाख लोगों को आपातकालीन भोजन और नकद सहायता प्रदान करता है और इसके प्राथमिक क्लिनिकों में प्रति वर्ष 1-5 करोड़ लोग आते हैं। गुटेरेस ने कहा कि इन सबके बावजूद, यूएनआरडब्ल्यूए को अत्यधिक और बढ़ते दबाव में काम करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है, इसके कर्मचारी गाजा में मारे जा रहे हैं, इसके परिसर नष्ट हो गए हैं, और इसे बजट की कमी का सामना करना पड़ रहा है।

यमन में इजरायल का बड़ा हवाई हमला

सना। यमन की राजधानी सना में इजरायल के भयावह हवाई हमले में कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई, जबकि कई लोग घायल हुए हैं। शुक्रवार को इस बात की जानकारी यमन के हथी विद्रोहियों ने दी। यह हमला गुरुवार को हुआ था, जो इजरायल और ईरान समर्थित हथियों के बीच गाजा युद्ध को लेकर बढ़ते तनाव का हिस्सा है। इससे पहले गुरुवार को हथियों द्वारा दक्षिणी इजरायल के ईलात शहर में ड्रोन हमला किया गया था, जिसमें 22 लोग घायल हुए थे, जिसके जवाब में इजरायल ने ये हमला किया। मामले में हथी नियंत्रित क्षेत्र की स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि मरने वालों में चार बच्चे, दो महिलाएं और तीन बुजुर्ग शामिल हैं। इसके अलावा 59 बच्चे, 35 महिलाएं और 80 बुजुर्ग घायल हुए हैं। राहत कर्मी मलबे के नीचे फंसे लोगों की तलाश कर रहे हैं,

■ चार बच्चे समेत नौ की मौत, कई लोग घायल

इसलिए मौतों की संख्या बढ़ सकती है। इजरायली सेना ने कहा कि उन्होंने सना में हथी सैन्य कमांड सेंटर, कैंप और सुरक्षा केंद्रों को निशाना बनाया। वहीं हथी प्रवक्ता ने दावा किया कि इजरायली हमले ने आवासीय इलाकों और बिजली सुविधाओं को नुकसान पहुंचाया, लेकिन उनकी सुरक्षा प्रणालियों ने हमला रोकने में मदद की। ऐसे में अब बात अगर सना के निवासी की करें तो उन्होंने इस हमले के बारे में बताया कि एक हमले में एक भवन क्षतिग्रस्त हुआ, जहां हथी नेता रहते थे। विस्फोट इतना जोरदार था कि आस-पास के कई घर और वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गए। इसके साथ ही स्थानीय लोगों ने बताया कि विस्फोट के बाद पूरा इलाका धूल और काले धुंसे से भर गया था।

कंबोडिया से जुड़े अंतर्राष्ट्रीय साइबर टग गिरोह का भंडाफोड़ चार लोग गिरफ्तार

नई दिल्ली। दक्षिण-पश्चिम दिल्ली साइबर थाना पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए एक अंतर्राष्ट्रीय साइबर टग गिरोह का पर्दाफाश किया है, जिसके तार कंबोडिया में सक्रिय धोखेबाजों से जुड़े पाए गए हैं। पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है और उनके पास से चार अत्याधुनिक मोबाइल फोन बरामद किए हैं। यह गिरोह नकली ट्रेडिंग ऐप बनाकर लोगों को करोड़ों रुपये का चूना लगा रहा था। दक्षिण-पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त अमित गोयल ने गिरफ्तार आरोपियों की पहचान बुलंदशहर निवासी मनीक अग्रवाल (25), अबुल्ला उर्फ लुसिफर (23), मोहम्मद आमिर उर्फ रॉकी (26) और शनिमिया खान के रूप में हुई है। शिकायतकर्ता टी-सिंह ने बताया कि 10 जून 2025 को उन्हें 101 शून्य वेल्थ सर्किल नामक एक व्हाट्सएप समूह में जोड़ा गया।

शहबाज-मुनीर से मुलाकात से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस करते रहे ट्रम्प

पाकिस्तानी पीएम और आर्मी चीफ को 30 मिनट इंतजार कराया

वाशिंगटन। पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ और आर्मी चीफ आसिम मुनीर ने गुरुवार देर रात अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से मुलाकात की। बैठक से पहले ट्रम्प ने शहबाज को करीब 30 मिनट तक इंतजार कराया। इस दौरान ट्रम्प प्रेस कॉन्फ्रेंस करते रहे। दरअसल पाक पीएम रात करीब 2 बजे व्हाइट हाउस पहुंचे थे। उस वक्त ट्रम्प कार्यकारी आदेशों पर साइन कर रहे थे और पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे।

इस दौरान शहबाज व्हाइट हाउस में ही ट्रम्प का इंतजार करते रहे। बाद में दोनों के बीच करीब 1 घंटा 20 मिनट तक बैठक चली। यह मुलाकात व्हाइट हाउस में बंद कमरे में हुई। इस मीटिंग से मीडिया को दूर रखा गया। व्हाइट हाउस की तरफ से ट्रम्प और शरीफ-मुनीर की बातचीत को लेकर कोई तस्वीर या वीडियो अब तक जारी नहीं की गई। अमूमन अमेरिकी राष्ट्रपति जब किसी विदेशी नेता से मिलते हैं, तो व्हाइट हाउस आधिकारिक तस्वीरें जारी करती हैं। ट्रम्प और



■ व्हाइट हाउस ने फोटो-वीडियो तक जारी नहीं किया
■ बाद में दोनों के बीच करीब 1 घंटा 20 मिनट तक बैठक

शहबाज के यह 3 दिन में दूसरी मुलाकात थी। इससे पहले दोनों नेताओं ने 23 सितम्बर को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के दौरान मुलाकात की थी। उस बैठक में कतर, तुर्की, सऊदी अरब, इंडोनेशिया, मिस्र, यूएई और जार्डन के नेता भी शामिल थे। उस दौरान गाजा जंग रोकने पर बात हुई थी। शहबाज शरीफ की किसी अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ ओवल आफिस में पहली मुलाकात थी। पाकिस्तान के किसी पीएम अमेरिकी राष्ट्रपति से 6 साल बाद मुलाकात हुई है। इससे पहले जुलाई 2019 में इमरान खान और ट्रम्प के बीच बैठक हुई थी। इससे पहले

शहबाज शरीफ ने 23 सितम्बर को न्यूयार्क में ट्रम्प से मुलाकात की थी। इस दौरान मुस्लिम देशों के कई नेता मौजूद थे। बैठक से पहले पत्रकारों से बात करते हुए ट्रम्प ने कहा कि व्हाइट हाउस में एक 'महान नेता' आ रहा है। ट्रम्प ने मीडिया से कहा पाकिस्तान को प्रधानमंत्री और फोल्ड मार्शल आ रहे हैं। वे बहुत अच्छे व्यक्ति हैं और प्रधानमंत्री भी। दोनों ही (शहबाज और मुनीर) बहुत अच्छे हैं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री कार्यालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया कि बैठक में अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और विदेश मंत्री मार्को रूबियो भी मौजूद थे।

छात्राओं से छेड़छाड़ का आरोपी चैतन्यानंद की अग्रिम जमानत याचिका खारिज

नई दिल्ली। दिल्ली के पटियाला हाउस कोर्ट ने कथित वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े एक मामले में आरोपी स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती की अग्रिम जमानत याचिका को शुक्रवार को खारिज कर दिया। अदालत ने याचिका पर विचार करने के बाद यह निर्णय लिया कि उन्हें अग्रिम जमानत देना उचित नहीं होगा। चैतन्यानंद पर छात्राओं के साथ छेड़छाड़ और यौन शोषण के भी गंभीर आरोप लगे हैं। सुनवाई के दौरान दिल्ली पुलिस ने जमानत का पुरजोर विरोध करते हुए अदालत को बताया कि आरोपी पिछले एक महीने से फरार है।

फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति निकोलस सरकारों को 5 साल की जेल

92 लाख का जुर्माना भी लगा, 2007 में लीबियाई तानाशाह से पैसे लेने की साजिश रची थी

पेरिस। फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति निकोलस सरकारों को पेरिस की एक अदालत ने गुरुवार को आपराधिक साजिश के आरोप में 5 साल जेल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही उन पर 1 लाख यूरो (लगभग 92 लाख रुपये) का जुर्माना लगाया गया और 5 साल तक कोई सरकारी पद लेने पर रोक लगा दी गई है।

यह मामला 2007 के राष्ट्रपति चुनाव में उनकी जीत के लिए लीबिया के तत्कालीन तानाशाह मुअम्मर गद्दाफी की अवैध फंडिंग से जुड़ा है। हालांकि, कोर्ट ने सरकारों को भ्रष्टाचार जैसे अन्य आरोपों से



बरी कर दिया। 70 साल के सरकारों ने फ्रांस को कानून के खिलाफ बताते हुए ऊपरी कोर्ट में अपील करने का ऐलान किया है। निकोलस सरकारों को 2007 से 2012 तक फ्रांस के राष्ट्रपति रहे थे। उनकी पत्नी काला ब्लूनी एक फेमस सिंगर और मॉडल हैं। निकोलस सरकारों अपनी पत्नी काला ब्लूनी के साथ सुनवाई के

■ 70 साल के सरकारों ने फ्रांस को कानून के खिलाफ बताते हुए ऊपरी कोर्ट में अपील करने का ऐलान किया

लिए कोर्ट पहुंचे थे। अदालत ने फ्रांस को कानून के खिलाफ बताते हुए ऊपरी कोर्ट में अपील करने का ऐलान किया है। निकोलस सरकारों को 2007 से 2012 तक फ्रांस के राष्ट्रपति रहे थे। उनकी पत्नी काला ब्लूनी एक फेमस सिंगर और मॉडल हैं। निकोलस सरकारों अपनी पत्नी काला ब्लूनी के साथ सुनवाई के

भारत का परमाणु क्षमता को बढ़ाने की दिशा में सराहनीय काम: विश्व परमाणु संघ

मास्को। विश्व परमाणु संघ की महानिदेशक समा बिलबाओ लियोन ने विश्व परमाणु सप्ताह समारोह में कहा है कि भारत अपने स्वदेशी कार्यक्रम के साथ परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में शानदार काम कर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि चीन, भारत और अन्य एशियाई देशों में परमाणु ऊर्जा का अच्छा विकास हुआ है। लियोन ने कहा कि भारत की क्षमता की ओर देख रही है। उल्लेखनीय है कि यह समारोह रूसी परमाणु उद्योग की 80वीं वर्षगांठ का समर्पित है। उन्होंने कहा कि कई

चीन, भारत और अन्य एशियाई देशों में परमाणु ऊर्जा का अच्छा विकास हुआ

देश आपूर्ति श्रृंखला के लिए भारत की ओर देख रहे हैं। उन्होंने 2047 तक भारत के 100 गीगावाट के लक्ष्य का उल्लेख करते हुए कहा कि देश के पास करने के लिए बहुत बड़ा काम है और सभी का ध्यान इसी पर है कि इसे कैसे पूरा किया जाएगा। उन्होंने नीतिगत विकास पर कहा कि भारत को अपने परमाणु ऊर्जा अधिनियम और परमाणु क्षति के लिए नागरिक दायित्व अधिनियम में संशोधन करने की जरूरत है।

तुर्की के जवाब में भारत ने साइप्रस का मुद्दा उठाया

कहा: यूएन के मुताबिक समाधान हो, एर्दोगन ने यूएन में कश्मीर मुद्दे का किया था जिक्र

नई दिल्ली। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को वीकली प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने बताया कि विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने हाल ही में साइप्रस के विदेश मंत्री से बात की है। इस दौरान उन्होंने साइप्रस विवाद को यूएन नियमों के मुताबिक हल करने पर बात की। दरअसल तुर्की ने 1974 में साइप्रस के उत्तरी हिस्से पर कब्जा कर लिया था, तब से वहां विवाद की स्थिति बनी हुई है।

भारत के आज के बयान से तीन दिन पहले तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तईप एर्दोगन ने यूएन में जम्मू-कश्मीर का मुद्दा उठाया था। इस पर जायसवाल ने कहा कश्मीर मुद्दे पर हमारा स्टैंड 10 साल से पूरी तरह क्लियर है। जायसवाल ने कहा कि ऐसी कोई बातचीत नहीं हुई। उन्होंने नाटो से सावधानी से बयान देने को कहा। इसके साथ यह भी कहा कि भारत अपने लोगों के लिए सस्ती बिजली



■ इस पर जायसवाल ने कहा कश्मीर मुद्दे पर हमारा स्टैंड 10 साल से पूरी तरह क्लियर है

वार मुद्दे पर राष्ट्रपति पुतिन से बात की है। जायसवाल ने कहा कि ऐसी कोई बातचीत नहीं हुई। उन्होंने नाटो से सावधानी से बयान देने को कहा। इसके साथ यह भी कहा कि भारत अपने लोगों के लिए सस्ती बिजली

और देश की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठाता रहेगा। हाल ही में मार्क स्टे ने कहा था कि अमेरिका ने जो टैरिफ भारत पर लगाए हैं, उसका असर रूस पर भी पड़ रहा है।

उनके मुताबिक, टैरिफ की वजह से भारत ने रूस से उसकी यूक्रेन युद्ध रणनीति को लेकर जवाब मांगा है। उन्होंने दावा किया कि प्रधानमंत्री मोदी इस बारे में रूसी राष्ट्रपति पुतिन से बात कर रहे हैं। जायसवाल ने बताया कि इस साल जनवरी से अब तक 2,417 भारतीय अमेरिका से वापस आए। ये लोग सही दस्तावेजों के बिना वहां थे। भारत चाहता है कि लोग कानूनी तरीके से विदेश जाएं। अवैध तरीके से विदेश जाने वालों को रोकने के लिए केंद्र सरकार राज्यों के साथ मिलकर काम कर रही है। लोगों को जागरूक करने और झूठे नौकरी के आफर से बचने की सलाह दी गई है।

लश्कर डिप्टी चीफ बोला: हिंदुस्तान व हिंदुओं का सफाया होगा

इस्लामाबाद। लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) का डिप्टी चीफ सैफुल्लाह कसुरी का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें वो भारत से हिंदुओं का सफाया करने की धमकी देता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक ये वीडियो 22 अप्रैल के पहलगाम आतंक हमले से पहले का है।

कसुरी इस हमले के मास्टरमाइंड में से एक हैं। वीडियो में वह कहता है कि हमारे काफिले न रुकेंगे, न थमेंगे और तब तक चीन से नहीं बैठेंगे जब तक पूरे हिंदुस्तान पर 'ला इलाहा इलल्लाह' (अल्लाह के अलावा कोई दूसरा नहीं) के परचम लहरा नहीं देते। कसुरी आगे कहता है कि ये वक्त आने वाला है, कोई नाउम्मीदी नहीं। हम जिस मैदान में खड़े हुए हैं, अपने दुश्मन को चारो खाने चित्त किया है। ये हिंदु हमारे सामने क्या है। हिंदुस्तान का हिंदू मिट जाएगा और

■ पहलगाम हमले के पहले का वीडियो सामने आया, भारत में इस्लामी राज लाने की धमकी दी

इस्लाम का राज आने वाला है। कसुरी वीडियो में कहता है कि ये भाषण वो लश्कर के मुरीदके हेडक्वार्टर से दे रहा है। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान लश्कर के इस हेडक्वार्टर पर हमला बोला था। बाद में पाकिस्तानी सेना ने झुठ दावा किया था कि यह आतंकवादी अड्डा नहीं, बल्कि एक मस्जिद है। कसुरी ने पाकिस्तान को 'अल्लाह की दी हुई पनाहगार' बताया। उसने कहा: पाकिस्तान सलामती और अमन की सरजमीं है, ये दुनियाभर के मुस्लिमों का हमदर्द और मददगार है। इसके अलावा कसुरी ने दुनिया से पाकिस्तान की कद्र करने और जुड़ने को कहा।

यौन समस्याएं

यौन समस्याओं के विशेषज्ञ

पुराने से पुराने यौन रोग के मरीज एक बार अवश्य मिलें

डा. सम्राट

नशामुक्ति, शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा तम्बाकू, प्रोक्सीवॉन केसूल अपफीम, चरस, डोहे पोस्ट हंजेक्शन व अन्य नशा छुड़ाने का स्थायी ईलाज।

नावल्टी सिनेमा चौक गुजफरनगर (यू.पी.)

M-9412211108